मध्यप्रदेश में सहरिया जनजाति को विशेष संरक्षण

डॉ. प्रभा भिरोरिया, सहायक प्राध्यापक इतिहास, शासकीय महाविद्यालय, सुठालिया राजगढ़ (म.प्र.)

सारांश :–

मध्यप्रदेश जनजातियों की विभिन्ना से भरा प्रदेश है, जहां भारत वर्ष की सर्वाधिक जनजातियाँ निवास करती हैं, जन जातियों की बाहुल्यता वाला प्रदेश होने के कारण, यहां पर जन जातियों को सुरक्षा व संरक्षण भी दिये जाते हैं। आधुनिकता के साथ–साथ बड़ी जनजातियाँ तो बहुत अधिक विकसित हो गयी हैं, लेकिन कुछ जनजातियाँ आज भी ऐसी हैं, जो बहुत अधिक पिछड़ी हुई हैं। प्रदेश में 03 विशेष पिछड़ी जन जातियाँ हैं। – भारिया, बैगा और सहरिया। सहरिया प्रदेश की प्राचीन जन जातियों में से एक है।

यद्यपि राज्य शासन द्वारा विशेष पिछड़ी जनजाति विकास प्राधिकरणों की स्थापना की गई है जिसके अंतर्गत सहरिया जनजाति को विशेष संरक्षण एवं सुरक्षा प्रदान की जा रही है। साथ ही सहरिया संस्कृति संरक्षण के लिए एक संग्रहालय श्योपुर में स्थापित किया गया है, जो एक शोध केन्द्र भी है। यहां से सहरिया जनजाति के विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाले कारण और उनके निवारण प्राप्त किये जा सकते हैं। जैसे सहरिया जनजाति किस प्रजाति से है ? किन परम्पराओं और संस्कृति का अनुसरण करती है ? इस जनजाति को बचाने के लिए विशेष संरक्षण की आवश्यकता क्या है ? जिससे इस जनजाति को विलुप्त होने से बचाया जा सके।

परिचय :–

भारत जनजातियों की विभिन्नता वाला देश है एवं सर्वाधिक जनसंख्या का निवास स्थान मध्यप्रदेश की भूमि है। वर्तमान मध्यप्रदेश पूर्व में मध्य देश के नाम से विख्यात था, जो सदैव से ही विनाच्छित रहा है। वनवासियों के जीवन उपयोगी सामग्री कंदमूल, जड़ीबूटियां, जानवरों का शिकार करना, लकड़ी आदि की उपलब्धता के कारण मध्य भारत का विशाल भू–भाग इनका आश्रय स्थल रहा है। इसके अलावा सीमावर्ती सघर्षों से सदैव यहां की जन जातियाँ अपने को सुरक्षित महसूस करती थीं। यही कारण था कि यहां किसी एक प्रजाति की जातियों का निवास नहीं रहा अपितु विभिन्न प्रजाति की जातियों का निवास स्थान रहा है, जो आदिवासी या वनवासी कहलाते थे।

(1)जनजातियों के विभिन्न उपनाम :–

जन जातियों के कई उपनाम हैं, इन्हें वन्य जाति, वनवासी, आदिम जाति, गिरिजन आदि नामों से पुकारा जाता है। संस्कृत ग्रंथों में इन्हें आत्विक कह कर पुकारा गया है, जो प्राचीन काल से ही सभ्य समाज से दूर प्रकृति के बीच रहकर अपना जीवन यापन कर रही थी। इन जन जातियों की एक अलग विशिष्ट पहचान है। ये भौगोलिक रूप से निश्चित भू–भाग जंगलों, पहाड़ों, गुफाओं में निवास करते हैं। विभिन्न विद्वानों ने इन्हें विभिन्न नामों से संबोधित किया है।

(2) हट्टन महोदय के अनुसार :–

ये प्रीमिटिव ट्राइब्स है अर्थात आदिम जाति है।

जी.एस.घुरिये के अनुसार :–

हिन्दु समाज का पिछड़ा हुआ वर्ग कहा जाता है।

श्यामाचरण दुबे के अनुसार :–

निश्चित क्षेत्र में निवासरत समुदाय है, जिसका निश्चित धर्म, समाज संस्कृति व विशिष्ट पहचान है। जो आधुनिकता से आज भी कोसों दूर है।

भारतीय संविधान में स्थान व नाम :–

संविधान के अनुच्छेद 341 और 342 में वर्णित है – अनुच्छेद 366(24) अनुसूचित जातियों से ऐसी जातियों, मूलवंशों या जन जातियों के भाग या उनमें के यूथ अभिप्रेरित है, जिन्हें इस संविधान के प्रयोजन काल के लिए अनुच्छेद 341 के अधीन अनुसूचित जन जातियाँ समझा जायेगा। संविधान में वनवासियों को अनुसुचित जन जातियाँ कहा गया है। जो वनों पर आश्रित रहकर अपना जीवन यापन करती हैं।

(3)मध्यप्रदेश की विभिन्न जन जातियाँ एवं उप जन जातियाँ :–

गोड़, भील, बेगा, कोरकू, भारिया, हल्वा, कोल, सहरिया, भारिया हैं। इन सभी जनजातियों की कई सारी उप जनजातियाँ भी हैं।

गोड़ जनजाति की उपजातियाँ :– प्रधान, ओझा, अगरिया, नगरची और सोल्हास है। ये मध्यप्रदेश के सभी जिलों में निवास करती हैं।

भील जनजाति की उपजातियाँ :– पटेलिया, भिलाला, बारेला। ये बुरहानपुर, नीमच, खण्डवा, धार, झाबुआ, गुना में पाई जाती हैं।

बैगा जनजाति की उपजातियाँ :– नरेटिया, नाहर, रायभैना, कथभैना, बिझवार हैं। ये मण्डला, बालाघाट में मिलती हैं।

कोरकू जनजाति की उपजातियाँ :– बोदोयन, नाहला, बाबरी, मवेरूसिया हैं। ये बेतूल, छिन्दवाडा, खण्डवा, बुरहानपुरा होशंगाबाद में पाई जाती है।

भारिया जनजाति की उपजातियाँ :– पाण्डो, मुइनहार, भूटिया हैं। ये जबलपुर, छिंदबाडा की ओर निवास करती हैं।

हल्वा, कोल जनजाति की उपजातियाँ :– हल्वी, रॉयेल, श्रोहिला है। ये शहडोल, रीवा सतना, छिन्दबाडा में मिलती हैं।

माारिया जनजाति की उपजातियाँ :– भारिया, अबूझमारिया, दण्डि भी मोटाकोयटूर। ये शहडोल, पन्ना, छिन्दवाडा में निवास करती हैं।

सहरिया जनजाति की उपजातियाँ :– सेरिया, सहर हैं। इनके निवास स्थान भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, श्योपुर, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, दमोह, सागर, विदिशा, छतरपुर हैं।

जन जातियों की बाहुल्यता के कारण मध्यप्रदेश को जनजातियों का प्रदेश भी कहा जाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार 1.53 करोड़ जनसंख्या जनजातियों का है। जो प्रदेश की 20. 10 प्रतिशत के अंतर्गत आता है। इनमें से कुछ जनजातियाँ तो आधुनिकता के साथ विकसित होती जा रही है, लेकिन कुछ जनजातियां विशेष रूप से पिछड़ी हुई है। जैसे – बैगा, भारिया और सहरिया।

सहरिया का अर्थ :–

सहरिया शब्द फारसी भाषा के 'सहर' शब्द से बना है। जिसका अर्थ 'जंगल' होता है। सहरिया जनजाति के लोग समूह में जंगलों में निवास करते हैं। सहरियाओं को "बाघ का साथी" भी कहा जाता है। वर्षों से जंगल या उसके आसपास निवास करने के कारण ये जानवरों के रक्षक, सहचर भी कहलाते हैं।

सहरियाओं की उत्पत्ति :–

सहरिया कोलेरियन परिवार की सम्पूर्ण पहचान रखने वाली जनजाति है। इनके विषय में विभिन्न विद्वानों ने अपने अलग–अलग मत व्यक्त किये हैं।

1.जनरल कनिंघम के जनजातिय अध्ययन के अनुसार :–

किसी समय प्रभावशाली शासक रूप में प्रतिष्ठित सबर, सहरा, सौरों, सहरिया जनजाति का गोड़ों से युद्ध में पराजय के फलस्वरूप सामाजिक प्रतिष्ठा खो देने के कारण घने जंगलों की ओर पलायन कर गये थे।

कनिघम आगे लिखते हैं कि "सबर विशाल कोलोरियन प्रजाति के महत्वपूर्ण सदस्य थे। जब उत्तर एवं पूर्व में अन्य कोलोरियन जन जातियों ने एवं दक्षिण में गोड़ों ने इनके अधिपत्य को प्रभावित किया तो इनकी शक्ति एवं प्रभाव भी क्षीण हो गये, किन्तु अपने मूल कोलारियन परिवार से पृथक होने के बाद भी ये लोग अपनी आदिवासी पहचान बनाये हुए हैं। "

2.बेनकेश्वर के अनुसार :–

सेहर व अन्य वन्य जातियाँ भारत के पश्चिमी क्षेत्रों से होकर आयी है, बहुत समय पूर्व सहारा के हरे भरे मैदान मरू भूमि में परिवर्तित हो गये थे, तो वहां से पशुओं का पलायन हुआ जिसके फलस्वरूप शिकारी जनजातियों के समूह भी नील प्रदेश की ओर बढे तो कुछ जनजातियों के समूह भी विंध्य प्रदेश की ओर। विध्या पर्वत श्रेंणियों के साथ–साथ कुछ जनजातिय समूह ने दक्षिण की ओर रूख किया ।

इन जनजातियों को प्रोटोमेडिटेरियन प्रजाति में गिना जाता है। इन जनजातिय समूहों ने प्री. ड्रेविडन जनजातियों को जीता और बाद में उनमें ही घुलमिल गये एवं जिन जनजातियों में नीग्रिटो के लक्षण पाये जाते हैं वे मध्य भारत में भी मिलती हैं जैसे – कोल, बैगा, सोना, कोर्ट, सहरिया एवं भील आदि।

डॉ बनर्जी के अनुसार : "सहरिया जनजाति पूर्ण रूप से स्वदेशी, ये प्राचीन परम्पराओं का अनुसरण करते आ रहे हैं। इनका जीवन स्तर अभी भी कई दृष्टियों से पिछडा हुआ है।

संविधान में स्थान :–

संविधान के आदेश क्रमांक 1950 के अनुसार सम्पूर्ण मध्यभारत अब वर्तमान में मध्यप्रदेश में सहरियों को जनजाति माना गया है एवं आदेश क्रमांक 1951 (भाग –2) में सहरिया, सोसिया ओर सौर को अनुसूचित जन जातियों में रखा गया है।

अनुसूचित जनजाति संशोधन आदेश 1956 (भाग –4) मध्यप्रदेश में सहरियाओं को जनजाति माना गया है।

(4) सहरिया जनजाति की धार्मिक स्थिति :–

सहरिया जनजाति के धार्मिक संस्कार अन्य जन जातियों के समान ही देखने को मिलते हैं। धार्मिक पर्व मनाते समय कई प्रकार के संस्कार किये जाते हैं, इनके कई सारे देवी–देवता होते हैं, जिन्हें ये विशेष अनुष्ठान करके भोग व चढ़ावा चढाते हैं।

सहरियाओं के प्रमुख देवी – देवता :–

ठाकुर बाबा :– अर्थात ग्राम देवता सभी रक्षा करने वाले देवता, इन्हें चढ़ावा दारू और बकरे की बलि चढाई जाती हैं।

भैरव देव :– ग्राम के बाहर इनकी स्थापना की जाती है।

नाहर देव :– नाहर अर्थात सिंह, ये पशुओं के रक्षक देवता हैं, इनकी स्थापना जंगल में की जाती है। एवं अन्य देवता दरेठ देव, फारस देव, भूमिया देव आदि।

बीजासेन माता :–ये इनकी प्रमुख देवी मानी जाती हैं, जो सभी कष्टों को दूर करती है एवं बच्चों की रक्षा करती है।

सहरिया जनजाति की आर्थिक स्थिति :–

जंगल से संग्रहित जड़ी – बूटियों को बेचना इनका प्रमुख व्यवसाय है, किन्तु वर्तमान में वन क्षेत्र सीमित होते जा रहे हैं। इस कारण से इनके जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रहण भी नही हो पाता है। इनके परम्परागत अन्य व्यवसाय कृषि, पशुओं का शिकार करना, तेंदुपत्ता संग्रहण, महुआ बीनना, लकड़ी एकत्र करना और स्थानीय बाजारों में बेचना, वनोत्पाद के अलावा मधुमक्खी के छत्ते से शहद निकालकर एकत्र करना।

(5)सहरिया जनजाति के पिछड़ेपन के कारण :–

1.धार्मिक कारण :– समाज में प्रचलित विभिन्न रीति रिवाजों को मानने के कारण ये लोग अब भी आधुनिकता से दूर हैं। नये संसाधनों को अपनाने से डरते हैं। बीमार होने पर आधुनिक चिकित्सा पद्धति को न अपनाते हुए, झाड़ फूंक करवाना, चढावा चढाना देवी देवताओं पर आदि करते हैं।

2.शिक्षा का अभाव :– सहरिया जनजाति में शिक्षा का स्तर निम्न है, शिक्षा की कमी के कारण समाज में जागरूकता की कमी है। अंधविश्वास के कारण शिक्षा की तरफ रूझान नहीं है।

3.आर्थिक कारण :– सहरिया जनजाति शिक्षा की कमी के कारण वर्तमान समय के साथ–साथ अपने को ढाल नहीं पा रहे हैं। इनके परम्परागत व्यवसाय वनों की कमी के कारण समाप्त होते जा रहे हैं। क्षेत्रों का औद्योगीकरण होता जा रहा है। इनके पास कृषि योग्य भूमि भी नहीं है।

4.अंधविश्वास एवं रूढिवादिता :– सहरिया जनजाति अपनी प्राचीन परम्पराओं का निर्वाहन पूर्ववत करती आ रही है। जिसके कारण कई धार्मिक क्रियाकलाप, रूढ़िवादिता से प्रेरित रहते है, जैसे कोई महामारी, माता निकलना आदि को वे दैविक प्रकोप मानकर आधुनिक चिकित्सा पद्धति से दूर रहते हैं। पैदल चलने के लिए भी ये लोग पगडंडियों का उपयोग करते हैं। समूह में रहना पसंद करते हैं।

5.शहरों की ओर पलायन :– कृषि योग्य भूमि न होने एवं वन क्षेत्र सीमित होते जाने एवं उन क्षेत्रों का औद्योगिकीकरण होने के कारण सहरिया जनजाति के लोग शहरों की ओर रोजगार की तलाश में पलायन करते हैं, लेकिन उन्हें उचित रोजगार नही मिलता है। अतः वे दैनिक मजदूरी, दिहाड़ी या छोटै–मोटे कार्य कर अपने परिवार का पोषण करते हैं। ये लोग बहुत मेहनती होते हैं। अतः मजदूरी या श्रम का कोई भी कार्य कर लेते हैं।

6.मध्यप्रदेश द्वारा सहरिया जन जातियों को प्रोत्साहन :– मध्यप्रदेश शासन द्वारा विभिन्न जनजातियों के कल्याण के लिए पृथक से जनजातिय विभाग की स्थापना की गई है। जिसके द्वारा इनके सामाजिक कल्याण, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के लिए विभिन्न प्रशिक्षण संस्थायें बनाई गई हैं एवं विभिन्न

योजनाएं भी लागू की गई हैं। जिससे इनकी आर्थिक दशा मे सुधार हो सके। स्वरोजगार करने के लिए प्रशिक्षण संस्थाओं के द्वारा इनको विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। जिससे इनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हो सके।

7.सहरिया संग्रहालय :–

श्योपुर जिले में अत्यन्त पिछड़ी जनजाति सहरियाओं की संस्कृति की संरक्षण के लिए सहरिया विकास प्राधिकरण एवं पुरातत्व एवं संस्कृति संरक्षण समिति के तत्वाधान में सहरिया संग्रहालय की स्थापना की गई है। वास्तव में यह सहरिया संस्कृति का शोध केन्द्र भी है।

सार :–

किसी भी जनजातिय समूह की अपनी विशिष्ट पहचान होती है और ये पहचान उसके समूह के द्वारा निर्वहन की गई परम्पराओं, संस्कृति से होती है। आज सहरिया जनजाति भी आधुनिकता की चका–चौंध में विलुप्तता की कगार पर है। अतः इस जनजाति को और भी अधिक सुरक्षा एवं संरक्षण की आवश्यकता है। जिससे ये अपनी सामाजिक उन्नति तो करे, लेकिन अपनी प्राचीन पहचान को भी बरकरार रखें तभी हम कह सकते हैं कि मध्यप्रदेश आदिम जातियों का सबसे बड़ा संरक्षक प्रदेश है और तभी मध्यप्रदेश शासन की विभिन्न योजनांए जो जन जातिय विकास के लिए चलाई जा रही हैं, सार्थक सिद्ध होंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. ललित प्रसाद विद्यार्थी – भारतीय आदिवसी (उनकी संस्कृति और सामाजिक पृष्टभूमि) प्रकाशक :– शंभुनाथ वाजपेयी, वाराणसी

2. डॉ श्रीवास जनजातिय समाज, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल वर्ष 2015 पृ.– 19

3. मजुमदार डी.एन.रेस एण्ड कल्चर ऑफ इण्डिया, एशिया पब्लिशिंक हाउस बाम्बे 1958 पृ.– 355

4. भटनागर एस.के. गाधेर, 27 विलेज सर्वे ऑफ इण्डिया 1961, 1968 – प्रकाशित

5. निरगुणे बसंत, सहरिया, मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद भोपाल का प्रकाशन 2001–2002 पृ. 8

6. शोध पत्र सहरिया जनजाति अमरकंटक विश्वविद्यालय

7. www.ugc.ac.in